आत्मिक उत्साह

Pastor Samit Kumar

My Story will be God's Glory

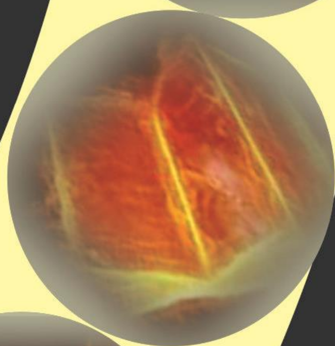

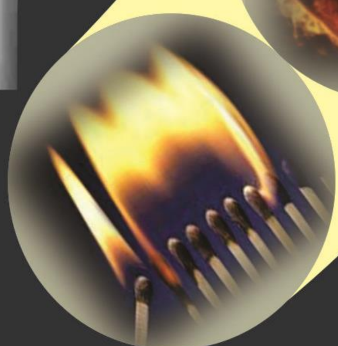

आत्मिक उत्साह
@SPAKharar

First Edition – November, 2018

All Right Reserved: - No portion of this book may be translated or reproduced in whole or in part in any form without the written permission of the publisher.

Published by
Pr. Samit Kumar
Kothi No 513 B, LIC Colony, Mundi Kharar, Mohali, Punjab, Pin 140301, India
Phone – 9888565337
E-mail – kumarsamit12@gmail.com
URL- www.facebook.com/SPAKharar/
https://www.youtube.com/c/spiritualpassionassembly/

Price – 50/-

विषय–सूची

1 लेखक की कलम से

2 आत्मिक उत्साह से भरा जीवन

3 प्रार्थना आत्मिक उत्साह के लिए एक हथियार

4 पाप और उसके प्रभाव से छूटना

5 निर्भरता उत्साह के लिए सेतु

6 पहले सा प्रेम

7 अपनी बुलाहट की पहचान

8 अपने अदन को समझना और उसमें काम करना

9 आपकी बुलाहट फल लाने के योग्य है

10 सामर्थ्य का इस्तेमाल करना

11 अन्तिम अभिवादन

लेखक की कलम से

मेरा नाम पास्टर समित कुमार है और मुझे परमेश्वर ने हिन्दु परिवार से चुना। यों तो परमेश्वर ने मुझे जगत की उत्पत्ति से पहले ही चुन लिया था पर मैं दुनिया के कामों में खोया रहा। अतः साल 2005 में मुझ पर परमेश्वर का अनुग्रह हुआ कि मैं उस चुनाव को समझ पाया और प्रभु यीशु मसीह को अपना मुक्तिदाता गृहण किया।

मैं अपने परिवार के साथ मुण्डी–खरड़, मोहाली (पंजाब) में 10 साल से सेवा कर रहा हूँ, और इन 10 सालों कि सेवा में मैंने कई विश्वासी और सेवकों के आत्मिक उत्साह को टूटते और खत्म होते हुए देखा। उनकी स्तुति, आराधना, प्रार्थना, संगती आदि में उत्साह की कमी को देखकर मुझे दुख होता था। यहां तक की मुझे प्रभु में लाने वाला परिवार और प्रभु में उत्साहित करने वाले लोग आज प्रभु में निरुत्साहित नज़र आते है। मैं हैरानी से परमेश्वर को पुछता था कि जब इन लोगों ने नया जन्म पाया है, जब आपकी सच्चाई को जान लिया है, जब यह सत्य के द्वारा स्वतंत्र हुए हैं, तो कैसे, फिर से निरुत्साह के गुलाम हो सकते हैं। एक राजा कभी अपनी पदवी से निचले स्तर का जीवन व्यतीत नहीं करता, तो यह राजाओं के राजा के बच्चे होकर कैसे अपने उत्साह को त्याग कर जी सकते हैं।

ऐसे अन्य सवालों से भरे मन के साथ जब एक दिन मैं प्रार्थना में बैठा था तो मुझे परमेश्वर ने कहा कि मैं आत्मिक उत्साह पर यह पुस्तक लिखूं। इससे पहले मैंने कभी कोई पुस्तक नहीं लिखी, तो भी मैंने परमेश्वर की इस आज्ञा को स्वीकार किया और इस पुस्तक को लिखना आरम्भ किया ताकि मैं परमेश्वर में निरुत्साहित लोगों को आत्मिक उत्साह से भर सकूं। क्योंकि उत्साह वो सामर्थ है या वो जोश है जो आपको न केवल किसी काम को करने में लगाये रहता है बल्कि उसे पूरा करने का भी सामर्थ देता है।

मैं इस पुस्तक का हर एक शब्द प्रार्थना और भविष्यवाणी के साथ लिख रहा हूँ और मुझे निश्चय है कि जैसे–जैसे आप इसे पढ़ेंगे आपके अन्दर का आत्मिक मनुष्यत्व उत्साहित होता जाएगा। या यह समझ लीजिए कि आपके अन्दर निरुत्साहित पडे आपके आत्मिक मनुष्यत्व का हृदय, बुद्धि, आँखें, कान, हाथ, पैर, आवाज़ यानि पूरा का पूरा व्यक्तित्व उत्साहित होकर उभरने लगेगा। आप फिर से निरुत्साहित नहीं होंगे क्योंकि आप निरुत्साहित करने वाले कारणों को जानने जा रहे हो।

आत्मिक उत्साह से भरा जीवन

प्रेरितों के काम की पुस्तक पढ़ने के समय आप देखेंगे कि चेले आत्मिक उत्साह से भरा जीवन व्यतीत करते थे। दूसरी ओर इन्ही चेलों को जब आप चारों सुसमाचार में देखोगे तो ये इतने उत्साहित दिखाई नहीं देते। वे सेवा नहीं करते थे, प्रार्थना नहीं करते थे, उपवास नहीं करते थे, चमत्कार नहीं करते थे। फिर उनके साथ ऐसा क्या हुआ कि वो उत्साहित हो गए। उन्हे यह उत्साह कैसे प्राप्त हुआ? जब आप "प्रेरितों के काम" की पुस्तक अध्याय 2 को पढ़ोगे तो आप पाओगे कि जब चेलों पर पवित्र आत्मा उतरा तो वे सब उत्साह से भर कर ऐसी आराधना करने लगे जिसकी आवाज़ को पूरी दुनिया से आए लोग भी सुन पा रहे थे।

वही आत्मा परमेश्वर ने आपको भी भरपूरी के साथ दिया है क्योंकि आत्मा के नाप जैसी कोई चीज़ नहीं होती। *यूहन्ना का सुसमाचार 3:34 कहता है "... क्योंकि वह आत्मा नाप नापकर नहीं देता"*। हमारा परमेश्वर अन्य जातियों के मन्दिरों के समान एक कोने में पडा नहीं रहता परन्तु वह मन्दिर को पूरा भर देता है। वह अपने वस्त्र के घेर से मन्दिर को पूरा भर देता है (यशायाह 6:1), वह अपनी उपस्थिति के बादल से मन्दिर को पूरा भर देता है (1राजा 8:10–12)। अब जब मसीह यीशु में आपकी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है (1कुरिन्थियों 6:19) तो आप कैसे अधूरे भरे हो सकते हैं। नाप आत्मा का नहीं परन्तु मन्दिर का होता है, जो परमेश्वर ने मूसा और सुलेमान को बताया था। अतः उस असीमित आत्मा को अपने में सीमित न करें, उसे आपको पूरा भरने दें, उसे नदी के समान आप में से बह जाने दें ताकि आपके आस–पास के लोग भी उसमें डुबकी लगा सकें।

हां कमी है तो सिर्फ आत्मिक उत्साह की। जिसे आज शैतान, मसीहियों के विरुद्ध इस्तेमाल कर रहा है। शैतान आपको स्तुति करने देता है, आराधना करने देता है, चर्च जाने देता है, प्रार्थना करने देता है, सेवा करने देता है पर आपको उत्साहित होने नहीं देता। क्योंकि वो जानता है कि आपका उत्साह आपमें वास करने वाले पवित्र आत्मा को सक्रिय कर देगा। क्योंकि लिखा भी है कि *चेले आनन्द से और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते रहे (प्रेरितों के काम 13:52)*। जी हां, पवित्र आत्मा आपमें पूर्ण रुप से उत्साहित होकर बैठा है पर आपके जीवन की निराशा उसे कार्य करने नहीं देती। क्योंकि उसका उत्साह केवल आपके उत्साह के साथ मिल कर ही कार्य कर सकता है। प्रेरितों के साथ भी तो ऐसा ही हुआ था उन्होने आत्मा पाने के

बाद कभी निराशा नहीं दिखाई। कलिसीया पर सताव आया, उन्हे बन्दी बनाया, कलिसीया से हनन्याह और सफीरा जैसे छिपे हुए पापी और विद्रोही निकले तो भी वे निरुत्साहित नहीं हुए।

हां यह सच है कि निराशा आएगी पर उस निराशा को किसी कीमत पर परमेश्वर के प्रति आपके उत्साह को चुराने न दे। एक बहुत अच्छा परिवार मेरे चर्च को छोडकर चला गया। उनके लिए मैं बहुत दुखी हुआ, बहुत प्रार्थना भी की। चर्च के कुछ अन्य लोग कहने लगे वो तो चर्च के खम्बे थे, अब क्या होगा? उन बातों से व्याकुल होकर मैं रो–रोकर प्रार्थना करने लगा। परमेश्वर गवाह है कि उस रात व्यक्तिगत प्रार्थना के समय आँसुओं से मेरी छाती तक भीग गई थी। तभी परमेश्वर ने कहा पुत्र खम्बे हिल सकते हैं, पर नीव नहीं, जो मैं हूँ। मैं पुनः उत्साहित होकर प्रार्थना और सेवा करने लगा। इसी उत्साह के परिणामस्वरुप कुछ समय बाद वो परिवार भी अपने आप वापिस आ गया और परमेश्वर ने उसी क्षेत्र से एक नया परिवार भी चर्च में दिया।

याद रखिए परमेश्वर ने आपको उस सेवा का भागी होने को बुलाया है जिसे प्रेरितों ने शुरू की थी। इस सेवा को आगे ले जाने के लिए ही उसने आपको आत्मा की भरपूरी दी है। पवित्र आत्मा की भरपूरी आपमें है, अब पवित्र आत्मा से भरा जीवन आपको जीना है। आपको पवित्र आत्मा और उत्साह से भरी इस सेवा को आगे ले जाना है। फिर कमी कहां है? आप हमेशा लोगों को सिर्फ बताते है कि उस चर्च में ऐसा हुआ, यीशु के चेलों ने यह चमत्कार किया था, उस भाई/बहन की गवाही यह है, हमारे चर्च में ऐसा हुआ। ध्यान दीजिए चेले कभी बताते नहीं थे पर करके दिखाते थे। आपको भी करके दिखाना है। कोई आपको अपनी समस्या बताए तो उसे गवाही न बताएं पर कहें आओ मैं आपके लिए प्रार्थना करता हूँ और यह उत्साह से भरी प्रार्थना उसे बचा लेगी।

पर आप जिस वस्तु के लिए उत्साहित ही नहीं हैं वो आपको मिलेगी क्यों? जैसे एक बच्चे को कोई तोहफा दे पर वो उसे लेकर उत्साहित ही न हो और उसमें कोई रुचि न दिखाए। इसके लिए सबसे बडी रूकावट है कि आपके दिमाग और हृदय का आपस में सहमत न होना, कैसे? क्योंकि दिमाग के पास विचार है और हृदय के पास ध्यान है। यह दोनो ही अलग–अलग दौड़ते हैं। हृदय आपको परमेश्वर से जोड़ कर आत्मिक उत्साह से भरना चाहता है तो दिमाग संसार की तरफ दौड़ा कर आपको चिंताओं से भरके निरुत्साहित करना चाहता है। इसलिए आपको व्यक्तिगत प्रार्थना में इन्हे एक करना है। क्योंकि हमारे प्रभु का ध्यान कभी

इन वस्तुओं के लिए नहीं भटका था। उन्होने अपने कार्य को सफलतापूर्वक पूरा किया है। चेलों के पास भी धन की कमी नहीं थी लोग धन ला–लाकर उनके पावों पर रखते थे, फिर भी उनका ध्यान कभी न भटका था। याद रखिए उत्साह और निराशा कहीं बाहर नहीं पर दोनों आपके अन्दर ही पडे है। आपको अपने दिमाग और हृदय को एक करके दोनों में से सिर्फ उत्साह पर लगाना है। क्योंकि आपका उत्साह ही आपको जीवित मसीही बनाता है। आपको भी चेलों के समान अपनी अगली पीढ़ी के लिए एक लीक को छोड़ना है। हां आप यह कर सकते हैं, आप दुनिया पर अपनी छाप छोड़ सकते हैं क्योंकि आप पर परमेश्वर की छाप लगी है (इफिसियों 1:13; यशायाह 49:16)।

"जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना का साहस देखा, और यह जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो आश्चर्य किया; फिर उनको पहचना, कि ये यीशु के साथ रहे हैं" (प्रेरितों 4:13)

"क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ और प्रेम और संयम की आत्मा दी है" (2तीमुथियुस 1:7)

"प्रयत्न करने में आलसी न हो" आत्मिक उन्माद में भरे रहो; प्रभु की सेवा करते रहो" (रोमियों 12:11)

प्रार्थना आत्मिक उत्साह के लिए एक हथियार

इस अध्याय में मैं प्रार्थना पर कुछ भेद खोलने जा रहा हूँ। क्योंकि एक आत्मिक रुप से उत्साहित जीवन के लिए प्रार्थना बहुत ज़रूरी है और प्रार्थना रहित उत्साह व्यर्थ है। यूनानी भाषा में प्रार्थना का अर्थ "तत्काल आवश्यकता के लिए मांगना" है। जिसका अर्थ हुआ कि आपकी किसी भी आपात्कालीन स्थिति और तत्काल जरुरत के लिए परमेश्वर से विश्वास के साथ मांगना। यानी प्रभु यीशु नया नियम में जिस प्रार्थना को सिखा रहे हैं उसका उत्तर आपको तभी मिलना चाहिए। परन्तु हकीकत में ऐसा होता नहीं और इस उत्तर न मिलने के कारण लोगों का प्रार्थना के प्रति उत्साह कम होने लगता है। पर मैं आपको बताना चाहता हूँ कि कोई प्रार्थना कभी खाली नहीं जाती। क्योंकि मैं आज भी उस स्वन दर्शन और उसके अर्थ को नहीं भूला जो परमेश्वर ने मुझे 3 साल पहले बडी सुबह दिखाया था। मैंने बहुत प्रकाश से भरा एक स्थान देखा तथा उस प्रकाश के कारण वहां मुझे सोने की धूपदानी के अतिरिक्त कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था और मुझे निश्चय है, वह स्वर्ग था। फिर मैंने अचानक एक भारी गरजन सा शब्द सुना इसे पुरानी राख से भर दो और इसे फिर से जलाओ। तभी मैं उठ खडा हुआ और प्रार्थना करने लगा तथा पवित्र आत्मा ने मुझे बताया कि परमेश्वर कुछ पुरानी प्रार्थनाओं का उत्तर देने जा रहे हैं। इसलिए मैं आपसे विनम्र विनती करता हूँ कि प्रार्थना पर अग्रलिखित प्रकाशनों को पूरे ध्यान से पढें :–

1. प्रार्थना में चुम्बकीय सामर्थ है – चुम्बक की सामर्थ को हम देख नहीं सकते तो भी वो धातुओं को अपनी ओर खींच लेती है। प्रार्थना में भी यह अदृश्य चुम्बकीय सामर्थ होती है जो बडी आसानी से आशीषों को खींच लेती है। इसी अदृश्य सामर्थ ने जंगल में इस्रायलियों के लिए भोजन और आश्रय की आशीष को खींचा था। इसी अदृश्य सामर्थ ने एलिय्याह के लिए स्वर्ग से आग को खींचा था। इसी अदृश्य सामर्थ ने राजा हिजक्कियाह के लिए चंगाई की आशीष को खींचा था। इसी अदृश्य सामर्थ ने अब्राहम के लिए समृद्धि की आशीष को खींचा था। इसी अदृश्य सामर्थ ने आरम्भिक कलिसीया के लिए अनेको चमत्कारों की आशीष को खींचा था। मैं आपको चुम्बक बनने की चुनौती देता हूँ। आज से प्रार्थना करें फिर देखिए यह चुम्बकीय सामर्थ आपके लिए और आपके अपनो के लिए आशीषों को कैसे खींच लेती है।

2. प्रार्थना एक व्यक्तिगत रिश्ता स्थापित करना है – मति अध्याय 6 में प्रार्थना पर प्रभु यीशु की शिक्षा पर मनन करें। प्रभु कहते है कि कपटियों के समान गलियों में प्रार्थना न करें पर गुप्त में पिता के साथ रिश्ता बनाएं। और किसी भी रिश्ते को मज़बूत करने के लिए आपको दूसरे के साथ समय बिताना ज़रूरी होता है। हाय यह कैसी विडम्बना है कि जिस परमेश्वर के लिए आप दिन रात भागते हो उसी के पास बैठने का आपके पास समय नहीं है। याद रखिए आप दुसरे के साथ जितना समय बिताएंगे उतना ही एक दूसरे को समझेगे, जानेगे और पहिचानेंगे। हमारे प्रभु में उस रिश्ते को बनाए रखने के लिए कितनी तीव्र इच्छा थी कि वो मनुष्यों के साथ समय न बिता कर परमेश्वर के साथ अधिक समय बिताते थे। क्या यह इच्छा आपमें है? अपने घर में पैदा होने वाले बच्चे को हम कितनी जल्दी मम्मी, पापा, दादी, दादा बोलना सिखाते है। क्यों? यह हम इसलिए नहीं करते की वो बोलना सीखे पर ऐसा करने के पीछे हमारी एक ही मनसा होती है कि वो हमसे बात करे। और जब वह छोटे–छोटे शब्द बोलने लगता है तो हम खुशी से झूम उठते हैं। इसी प्रकार जब परमेश्वर ने प्रभु यीशु में आपको नया जन्म दिया है तो वह भी चाहता है कि आप भी उससे बात करें और न सिर्फ इस रिश्ते को शुरू करें वरन इस की गहराई में जाएं। जिस परमेश्वर ने आपको पापी होने के बावजूद इतना प्रेम किया कि आपके पापों की क्षमा के लिए अपने लहू की आखिरी बूंद तक बहा दी उससे बात किए बिना या उसके साथ रिशता बनाए बिना आप कैसे सोने जा सकते हो।

3. प्रार्थना अपने भाग्य तक पहुचने का सबसे तेज़ रास्ता है – *फिर उन्होंने होर पहाड़ से कूच करके लाल समुद्र का मार्ग लिया कि एदोम देश में बाहर बाहर घूमकर जाएँ; और लोगों का मन मार्ग के कारण बहुत व्याकुल हो गया (गिनती 21:4)*। जब परमेश्वर ने इस्रायलियों को एदोम देश से लडने को रोक दिया और उन्हे उस देश के बाहर बाहर जाने को कहा तो उनका मन उस मार्ग के कारण व्याकुल हो गया। क्योंकि वो मार्ग आसान नहीं था। वह लम्बा मार्ग था और खतरों से भरा था। जरा सोच कर देखें आप भी जब कहीं जाने कि सोचते है तो हमेशा वो रास्ता चुनते हैं जो आपको जल्दी पहुचाए। वहीं आत्मिक क्षेत्र में कुछ विश्वासी प्रार्थना का रास्ता सबसे आखिर में चुनते हैं। इसीलिए बाइबल कहती है *तुम्हें इसलिये नहीं मिलता, कि मांगते नहीं (याकूब 4:2)*। ऐसे लोगों से मैं कहना चाहता हूँ कि जो सबसे पहले प्रार्थना का रास्ता चुनते है वो हमेशा अपने भाग्य को प्राप्त करते है। क्योंकि इस रास्ते में शैतान कोई रुकावट

नहीं डाल सकता। हो सकता है कि आपके पास प्रार्थना न करने के कई कारण हो फिर भी मैं कहता हूँ कि प्रतिदिन प्रार्थना करने के लिए एक कारण चुनिए। क्योंकि प्रभु यीशु आपकी आवश्यकता में आपकी मदद करने के लिए अनुग्रह के सिंहासन पर बैठा है (इब्रानियों 4:16)।

5. प्रार्थना दवाई से भी जल्दी असर दिखाती है – दिसंबर 24, 2017 को मैं अपनी चर्च की टीम के साथ सुसमाचार बांट रहा था। उसके तुरन्त बाद मैं बीमारों के लिए प्रार्थना करने लगा तभी वहां एक व्यक्ति आया जिसकी नाभी से पस निकलती थी, उसे नाभी में दर्द था और सांस लेने में भी मुश्किल हो रही थी। मेरे पूछने पर उसने बताया कि डॉक्टर उसका आपरेशन कर चुके हैं पर दर्द और साँस की तकलीफ अभी भी बनी हुई है। मैंने वहीं खड़े–खड़े उसके लिए प्रार्थना की और उसने कहा मुझे कुछ अराम है। मैंने पूरी चंगाई के लिए दोबारा प्रार्थना की और बड़ी भीड़ के बीच उस भाई ने पुष्टी की कि वो पूरी तरह स्वस्थ है। परमेश्वर ने उसकी नाभी को नया कर दिया था। वहां से वापिस आने के समय पर मेरा 8 साल का बेटा (केविन) जो उस समय मेरे साथ खड़ा था, उसने मुझ से कहा कि पापा उस चमत्कार को देखकर आज मुझे प्रभु पर पूरा विश्वास हो गया। यह सुनते ही मैं दुगने उत्साह से भर गया। इसलिए दवाई से अधिक, डॉक्टर से अधिक या हस्पताल से अधिक प्रार्थना पर विश्वास करें। क्योंकि दवाई को शरीर द्वारा अवशोषण करके असर दिखाने में जितना समय लगता है उससे भी कम समय में प्रार्थना अपना असर दिखा देती है। क्योंकि शरीर द्वारा दवाई को अवशोषण करने के कई मापदण्ड हैं जैसे कि आयु, बीमारी, रक्त बहाव आदि। फिर शरीर द्वारा दवाई के अवशोषण के बाद भी उसे प्रभावित स्थान तक पहुच कर चंगा करने में समय लगता है। इसके विपरीत प्रार्थना का अवशोषण बहुत जल्द होता है। प्रार्थना पल भर में ही करोड़ों किलोमीटर का सफर तय करके स्वर्ग से उत्तर ले आती है।

समझने की कोशिश करें यदि आप प्रार्थना के स्थान पर लोगों को हस्पताल भेजते रहेंगे तो चर्च तो खाली हो जाएंगे। अब आपके मन में सवाल उठ रहा होगा, कि यदि कोई मर गया तो? पर मैं आपको हर किसी को भेजने से नहीं रोक रहा हूँ। आप सोच रहे होंगे फिर मुझे कैसे मालूम चलेगा? मैं बताता हूँ जब एक व्यक्ति लम्बे समय से बीमार है पर उसके शरीर की सारी जाँच और रिपोर्ट में कुछ नहीं आता। इसका अर्थ है कि उसे ईश्वरीय छुटकारे की ज़रुरत है। आपको उसके लिए प्रार्थना करना और उसे छुटकारा दिलाना है।

आपके जीवन में भी ज़रूर कभी न कभी ऐसा अनुभव हुआ होगा और आप परमेश्वर के अद्भुत काम को देखकर उत्साहित भी हुए होंगे। पर कुछ समय बाद जब वही व्यक्ति उसी बीमारी के साथ वापिस आया होगा, तब आपका उत्साह कम हो गया होगा। आप अपने आपको दोषी समझ रहे होंगे। परमेश्वर से क्षमा मांग कर पश्चाताप कर रहे होंगे, पर गलती या कमी आपकी नहीं है बल्कि उसका पुराना जीवन है। जी हां, जब एक व्यक्ति पुराने जीवन की ओर लौटता है तो पुराना दर्द और बीमारी भी साथ ही लौटते हैं। इसलिए आप निराश न होकर उसे समझाना है कि उसे पुराने जीवन, पुराने पाप और संसार के लिए मरना है और खुद प्रार्थना में बढ़ते जाना है।

6. प्रार्थना योजना से अधिक कार्यशील है – मैंने लोगों को अक्सर अपनी बुद्धि, सलाहकार या उनके साथ खडे लोगों पर घमण्ड करते देखा है। पर यह सब उनको अधिक देर तक सफल बनाए नहीं रख सकता। क्योंकि परमेश्वर के बिना कोई सफलता है ही नहीं। *युद्ध के दिन के लिये घोड़ा तैयार तो होता है, परन्तु जय यहोवा ही से मिलती है (नीतिवचन 21:31)* और सर्वशक्तिमान परमेश्वर को अपनी ओर रखने का सबसे उत्तम तरीका है प्रार्थना। फिर योजना चाहे मनुष्य की हो या शैतान की जीत आपकी होगी। अपने आने वाले कल के लिए आपने कई योजनायें बनाई होंगी। वो सब योजनायें प्रार्थना के बिना पूरी नहीं हो सकती। अपनी योजना और तैयारी दोनों को प्रार्थना द्वारा परमेश्वर के अधिन करें तथा फिर देखें आप जहां जाएगे सफल होंगे।

7. प्रार्थना आपको परमेश्वर से भरपूर रखेगी – मानवजाति पर सबसे पहला और बड़ा अभिशाप यही था कि मनुष्य परमेश्वर की महिमा से रहित हो गया। पर जब यीशु के लहू पर विश्वास करके पवित्र आत्मा की अगुवाई में प्रार्थना का जीवन जीने लगते हैं तो आप परमेश्वर की उपस्थिति से भरे रहते हैं, उसकी महिमा से भरे रहते हैं, उसके प्रकाश से भरे रहते हैं, उसकी सामर्थ से भरे रहते हैं, उसके दर्शन और प्रकाशनो से भरे रहते हैं। आप जहां जाते हैं यह आपके साथ आते हैं। सही मायनों में आप परमेश्वर की उपस्थिति में चलने लगेंगे और इसी के लिए परमेश्वर ने आपको बुलाया भी है। याद रखिए कोई भी अभिषेक और सामर्थ में नहीं चल सकता परन्तु

सिर्फ उसकी उपस्थिति में चल सकता है। क्योंकि यह उसने आप कहा *"...मेरी उपस्थिति में चल और सिद्ध होता जा" (उत्पत्ति 17:1).*

वास्तव में जो परमेश्वर की उपस्थिति में बना नहीं रहता वो निरुत्साहित होने लगता है क्योंकि खाली व्यक्ति अपने आप से ही भरने लगता है। इसलिए आपको प्रतिदिन परमेश्वर से भरना चाहिए और भरने के लिए प्रतिदिन परमेश्वर की उपस्थिति का आनन्द मनाना चाहिए। एक बार एक बडी सभा में सब लोग पवित्र आत्मा से भर रहे थे। मैं भी वहां था पर मैं छुआ नहीं जा रहा था। क्योंकि उस समय तक मैंने पवित्र आत्मा नहीं पाया था। मैं बडी भूख के साथ रो–रोकर कहने लगा पवित्र आत्मा मुझे भी भर दो। तभी परमेश्वर ने मेरे मन में कहा पुत्र रो मत परन्तु मेरी उपस्थिति का आनन्द मना और वैसा करते ही मैं पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गया। फिर मैंने मनन किया कि प्रेरितों ने परमेश्वर की भरपूरी का कितना आनन्द मनाया होगा। जब लोगों ने उन्हे कहा *"कि वे तो नई मदिरा के नशे में है" (प्रेरितों 2:13)*। यह उनके आनन्द की चर्म सीमा को दिखाता है। चेले चाहते हैं कि आप भी उसी आनन्द का अनुभव करें इसीलिए पौलुस कहते है *"और दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि इस से लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ" (इफिसियों 5:18)*।

आप सोच कर देखो कि पतरस परमेश्वर की उपस्थिति से कितना परिपूर्ण होगा कि उसकी परछंाई से लोग चंगे होने लगे। *"यहां तक कि लोग बीमारों को सड़कों पर ला लाकर, खाटों और खटोलों पर लिटा देते थे, कि जब पतरस आए, तो उस की छाया ही उन में से किसी पर पड़ं जाए। और यरुशलेम के आस पास के नगरों से भी बहुत लोग बीमारों और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुओं को ला लाकर, इक्ट्ठे होते थे, और सब अच्छे कर दिए जाते थे" (प्रेरित 5:15–16)*। मैं बताता हूँ पतसर यीशु के डील डोल में बढ़ता रहा और यहाँ तक बढ़ गया कि उसकी परछाई भी यीशु की परंछाई बदल गई और फिर यह परंछाई जिस पर पड़ती वो चंगा हो जाता था। मेरे प्रियो, बाइबल कहती है कि हमें भी मसीह के सर तक बढना है। *"वरन प्रेम में सच्चाई से चलते हुए, सब बातों में उस में जो सिर है, अर्थात मसीह में बढ़ते जाएं" (इफिसियों 4:15)*।

पवित्र आत्मा मेरे मन में कह रहा है कि कुछ लोगों ने इसे कभी अनुभव नहीं किया। ध्यान दिजीए यदि आप हर समय परमेश्वर की उपस्थिति को महसूस करना चाहते हैं, उसकी भरपूरी से भरे रहना चाहते हैं तो अपना हृदय, आँखें और कान सदा उसके लिए खुले रखें। वो जो कहे, जो दिखाए, जो मन में डाले दृढ़ता के साथ उसके अनुसार कार्य करें। पूरा विश्वास

रखें कि यह परमेश्वर की ओर से है उसी के अनुसार प्रार्थना करें, प्रचार करें या निर्णय लें। यहां एक और बात कहना चाहता हूँ कि एक विश्वासी, एलडर या अगुवा होते हुए जब आप किसी सभा/मिटिंग का नेतृत्व या अगुवाई करने जा रहे हों तो आप बिना प्रार्थना के न जाएं। यदि आप एक घण्टे की सभा के लिए जा रहे हैं तो पहले खुद एक घण्टा प्रार्थना करें।

मेरे प्रिय भाई/बहन आप प्रार्थना करने वाले बनें। क्योंकि हम मसीही ही तो प्रार्थना करने वाले लोग हैं और यदि हम ही प्रार्थना न करें तो कैसा होगा। जैसे एक डॉक्टर कहे कि मैं निरीक्षण करूँगा, दवाई दे दूँगा पर ऑपरेशन नहीं करूँगा। वैसे ही आज मसीही लोग चर्च जा रहे हैं, गीत गा रहे हैं, ताली बजा रहे हैं पर व्यक्तिगत प्रार्थना नहीं कर रहे। पर याद रखिए प्रार्थना के बिना मसीही जीवन सूखा और बेजान है। क्योंकि प्रार्थना आपको विश्वास में बनाए रखेगी और विश्वास आपको प्रार्थना में। आपके माता–पिता ने आपको कई अच्छी आदतें सिखाई होंगी और आप आगे अपने बच्चों को सिखा रहे होंगे। वैसे ही प्रार्थना भी एक अच्छी आदत है इसलिए रोज़ प्रार्थना करें। आपको प्रार्थना करता देख आपके अपने भी प्रार्थना करने लगेंगे। आपके आस–पास सब बदलना शुरु हो जाएगा। आप सिर्फ अभिषेक में, सामर्थ में, फलों में, वरदानों में, सेवा आदि में ही नहीं बढ़ेंगे बल्कि आत्मिक उत्साह से भी परिपूर्ण रहेंगे।

"निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो" (1 थिस्सलुनीकियों 5:17).

आत्मा को न बुझाओ (1 थिस्सलुनीकियों 5:19)

"सब बातों का अन्त तुरन्त होनेवाला है; इसलिये संयमी होकर प्रार्थना के लिये सचेत रहो" (1पतरस 4:7)

पाप और उसके प्रभाव से छुटना

यदि हमारा मन हमें दोष न दे तो हमें परमेश्वर के सामने हियाव होता है (1यूहन्ना 3:21)

प्रार्थना में परमेश्वर के साथ एक व्यक्तिगत रिश्ते को स्थापित कर लेने के बाद भी कुछ लोग निरुत्साहित दिखाई देते हैं उसका कारण है पाप। जी हां पाप परमेश्वर के साथ आपके रिश्ते की उस तार को काट देता है। आप अपने जीवन में निराशा और निरुत्साह को महसूस करने लगते हैं। ठीक वैसे ही जैसे मोबाईल फोन चार्जर से अलग होकर शक्तिहीन होने लगता है। इस पाप के कारण आपको प्रार्थना या संगति में जाने का हियाव नहीं होता। पाप आपके शरीर को ही नहीं बल्कि आत्मा को भी घात करता है। पाप आपके मन को कठोर कर देता है। इस निराशा से निकलने के लिए आपको अपने पाप पर जय पाने की ज़रूरत है।

पर आज लोगों को पाप की पहचान नहीं रही क्योंकि संसार में हर कोई उन कामों को कर रहा है जो बाइबल के अनुसार वर्जीत हैं। उदाहरण के लिए हर कोई (छोटा या बड़ा, स्त्री या पुरुष) सिगरेट पी रहा है। हमें लगता है कि जो सब कर रहे है वो पाप कैसे हो सकता है इसलिए मैं भी कर सकता हूँ। पहले लोग छिप कर पाप करते थे पर आज कल सब कुछ सामने होता है और उसके लिए सबसे बड़ा कारण है कि आज लोग अच्छे को बुरा और बुरे को अच्छा कहते हैं। इसी पाप की प्रवृति के कारण कई विश्वासी और अगुवे *योना* के समान मच्छ के पेट में ही पड़े रहते हैं।

एक दिन मैं एक बहन के घर गया तो उसका पति घर के बाहर बैठा बीड़ी पी रहा था मुझे आता देख कर उसने बीड़ी चुपके से फेंक दी। उसे लगा होगा कि पास्टर के सामने बिड़ी–सिगरेट पीना पाप है। पर उसने कभी यह नहीं जाना कि वो हमेशा से इसे जीवित परमेश्वर के सामने पीता आया है। यह बात यूसुफ समझ गया था इसीलिए तो जब पोतीपर की पत्नी ने यूसुफ के साथ पाप करना चाहा तो वह कह उठा *"... मैं ऐसी बड़ी दुष्टता करके परमेश्वर का अपराधी क्योंकर बनूं" (उत्पत्ति 39:9)*। आज मनुष्य लोगों की नज़रों में बदनाम होना नहीं चाहता परन्तु परमेश्वर का क्या? परमेश्वर आपको हर समय देख रहें हैं। बाइबल कहती है कि उसकी दृष्टि सदा पृथ्वी पर घूमती रहती है। *"यहोवा की आँखें सब स्थानों में लगी रहती हैं, और वह बुरे भले दोनों को देखती रहती हैं" (नीतिवचन 15:3)*।

क्रूस की सामर्थ के द्वारा जिन कामों को आपने अपना गुलाम बना लिया अब आप दोबारा उन्ही के दास क्यों होना चाहते हो। आपको सयाना होने कि ज़रुरत है। इब्रानियों 11:24 कहता है कि *"विश्वास ही से मूसा ने सयाना होकर फिरोन की बेटी का पुत्र कहलाने से इंकार कर दिया"*। यानी मूसा इतना सयाना हो गया था कि वो पाप नहीं कर सकता था। यदि आप भी पाप को पूरी तरह छौडना चाहते हो तो आपको भी सयाना होना होगा। पाप के काम तो मरे हुए है और वो ज्यादा देर तक बने नहीं रहेंगे तो सयाने बन कर सोचिए कि मैं उस पाप के लिए क्यों मरूं जो पहले से ही मरा हुआ है।

उत्पत्ति 4:7 कहता है कि यदि तू भला न करे, तो पाप द्वार पर छिपा रहता है; और उसकी लालसा तेरी ओर होगी। हम दुनिया में देखते है कि ज्यादातर लोग पिछले से अधिक सामने वाले द्वार की सुरक्षा करते है। इसके लिए वे ताला, लोहे का जंगला, कैमरा आदि उपकरणों का भी इस्तेमाल करते है। परन्तु उनमें से कुछ लोग ही पिछले द्वार की सुरक्षा के बारे में सोचते हैं। पर प्रभु शैतान की इस चाल को पहले से जानते थे इसलिए उन्होने हमें यूहन्ना 10:1 में आगाह किया कि जो द्वार से नहीं आता वो चोर है। आत्मिक युद्ध में शैतान ज्यादातर पिछले द्वार को इस्तेमाल करता है और इसका सबसे बड़ा उदाहरण है कि वो कभी आमने–सामने आकर युद्ध नहीं करता। इसके विपरीत वो हमारे विचारों और संसारिक इच्छाओं का इस्तेमाल करके हमें पाप में ले जाता है। क्योंकि वो जानता है कि आमने–सामने के युद्ध से वो आपको निरुत्साहित नहीं कर सकता, और इससे न ही कभी आपका मन आपको दोष देगा।

एक दिन बड़ी सुबह मैंने दर्शन देखा। एक बहुत लम्बा और चौड़ा स्थान है जिसके दाएं और बाएं छोटी–छोटी दीवार थी, सामने द्वार था पर दूसरी और कोई रोधक नहीं था। और वहां से ऊपर की तरफ आग के समान लाल रोशनी आ रही थी। वह स्थान इसी रोशनी से प्रकाशमान हो रहा था क्योंकि वहां अन्य रोशनी नहीं थी। मैं जल्दी ही समझ गया कि वो नरक की आग है। यह स्थान लोगों से भरा था और शैतान के दूत उन छोटी दीवारों पर बैठ कर लोगों को पर्चे दे रहे थे जिस पर लोगों को परमेश्वर से दूर करने की योजनाएं लिखी थीं जैसे कि प्रार्थना न करें, दवाई पर निर्भर रहें, अन्य मसीहियों से दूर रहें आदि। और वो कह रहे थे कि बदलें में हम तुम्हारी लालसाओं को जैसे कि पैसा, शरीरिक अभिलाषा, नशा आदि को पूरा करेंगे। और शैतान के वो दूत वहां किसी को भी परमेश्वर का नाम लेने नहीं दे रहे थे। आज शैतान पाप के ज़रीए ही बड़ा काम कर रहा है और उस पाप का आनन्द लेते लेते मनुष्य दुष्टात्मा

का शिकार हो जाता है। पर बाद में वही आनन्द देने वाली दुष्टात्मा जब सताने लगती है तो दर्द होता है।

याद रखिए शैतान कितना भी चालाक हो पर उसके पास ज्यादा अधिकार न होने के कारण वो पुरानी ही चालें चलता रहता है। वो बार–बार आपको एक ही परीक्षा में गिराता है। उसी पुराने काम से आपके घर कि एकता को तोड़ देता है। ध्यान से सोच कर देखें आपके मन का आपको दोष देना अलग नहीं होता।

इसलिए आपको निराश होने की आवश्कता नहीं क्योंकि आप वचन, प्रार्थना और सामर्थ द्वारा बीते समय में उस पाप पर जय प्राप्त कर शैतान को सबक सिखा चुके हैं। यह सिर्फ आपका डर है जिसने आज उसे बड़ा बना दिया है। मैं कहता हूँ कि आप उसे न केवल हरा ही सकते हैं बल्कि उसे जड़ से उखाड़ सकते हैं। जब आप आत्मा में ऊपर हैं तो कोई पाप आपको नीचे नहीं कर सकता।

"धर्म के लिए जाग उठो और पाप न करो..." (1 कुरिन्थियों 15:34)

"और न अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिये पाप को सौंपो, पर अपने आपको मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपो, और अपने अंगों को धर्म के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपो" (रोमियों 6:13)

"क्रोध तो करो, पर पाप मत करो; सुर्य अस्त होने तह तुम्हारा क्रोध न रहे, और न शैतान को अवसर दो" (इफिसियों 4:26–27)

निर्भरता उत्साह के लिए सेतु

"फिर उसने उनसे कहा, जब मैं ने तुम्हें बटुए, और झोली, और जूते बिना भेजा था, तो क्या तुम को किसी वस्तु की घटी हुई थी? उन्होंने कहा, किसी वस्तु की नहीं" (लूका 22:35)

परमेश्वर ने हमें अपने स्वरुप और समानता में बनाया है तो भी हम पूरी तरह उस पर ही निर्भर हैं। पर मनुष्य इस बात को आसानी से मानने को तैयार नहीं होता। यही मानवीय स्वभाव है और यह स्वभाव बाल्यावस्था से हम में होता है। एक छोटे बच्चे के जीवन को देखो वो बार–बार अपने माता–पिता का हाथ छोड़ देता है कि मैं खुद चल लूंगा। फिर थोड़ा बड़े होने पर माता–पिता द्वारा पीछे से पकड़ी हुई साईकल को छोड़ने के लिए कहंता है कि मैं खुद चला लूंगा। मनुष्य के पास अपना बल, बुद्धि, योग्यता और निर्णय शक्ति होने के कारण ही वो परमेश्वर पर अपनी निर्भरता को स्वीकार नहीं करता। परन्तु यही मनुष्य जब असफल होने लगता है तब निरुत्साहित हो जाता है।

ज्यादातर विश्वासी और अगुवे भी ऐसा ही करते है। वो अपने स्तुति, आराधना, प्रार्थना, सेवा में अपना बल इस्तेमाल करते हैं परन्तु जब अच्छे परिणाम को नहीं देखते तब उनका आत्मिक उत्साह गिरने लगता है। उनके जीवन में भी एक समय ऐसा था जब वह नए जन्में बच्चे के समान हर काम के लिए पूरी तरह परमेश्वर पर निर्भर थे। नया जन्मा बच्चा भी तो मनुष्य ही होता है पर हां वो अपने बल, बुद्धि, योग्यता और निर्णय पर नहीं बल्कि माता–पिता पर निर्भर होता है। याद कीजिए जब आप इस प्रकार परमेश्वर पर निर्भर थे लोग आपके पास आते थे, वो आपके जलते हुए आत्मिक उत्साह को देखने आते थे। मूसा का ध्यान भी तो जलती हुई झाड़ी ने ही तो खींचा था। हमें नहीं पता कि वो झाड़ी कब से जल रही होगी पर जब वो जल कर राख नहीं हो रही थी मूसा उसे देखने गया। उस समय परमेश्वर पर आपकी निर्भरता ही आपका उत्साह था। पर जैसे–जैसे आप परमेश्वर का काम अपने बल अथवा अनुभव के आधार पर करने लगे लोगों का आना कम होने लगा और आपका आत्मिक उत्साह खत्म होने लगा।

परमेश्वर पर निर्भर होने का कदापि यह अर्थ नहीं है कि हम नासमझों की तरह काम करें। जब लूका 4:9–10 में शैतान यीशु को मन्दिर के कंगुरे पर ले गया तो यीशु ने परमेश्वर पर उसकी निर्भरता को दिखाने के लिए छलांग नहीं मारी। इसका सही अर्थ है कि अपने जीवन को पूरी तरह परमेश्वर के अधीन कर दें। आपका हृदय, आत्मा, प्राण, शरीर, व्यक्तित्व, मनुष्यत्व,

योग्यताएं, खूबियां, बल और वरदान सब उसके अधीन कर दें। आपका प्रार्थना जीवन ही आपकी निर्भरता का सबसे बड़ा चिन्ह होगा। क्योंकि केवल प्रार्थना ही वो स्थान है जहां मनुष्य खुद को छोटा करके परमेश्वर की सामर्थ, बुद्धि, इच्छा, राज्य और योजना की अधीनता को स्वीकार करता है। क्योंकि आप जिसके अधीन होंगे उसी पर निर्भर होंगे।

अब आप सोच रहे होंगे कि आज के समय में परमेश्वर पर निर्भर होकर चलना कठिन है। हो सकता है आप सही हो पर मैं आपको एक आसान और उत्तम तरीका बताता हूँ। आज के समय में परमेश्वर पर निर्भर होकर चलने का सबसे उत्तम और आसान तरीका है उसका वचन (बाइबल)। आप प्रतिदिन बाइबल पढ़ें, यदि किसी दिन समय न हो तो आते–जाते समय अपने फोन या कार में ऑडियों बाइबल सुने। फिर उस वचन के अनुसार कार्य करने कि कोशिश करें। आपके काम उसके वचन पर निर्भर हो जाएंगे। और दूसरा तरीका है आपमें वास करने वाले पवित्र आत्मा की सूनना क्योंकि आत्मा परमेश्वर की इच्छा को जानता है (रोमियों 8:27)। जब आप उसकी सुन कर कार्य करेंगे तो आप खुद–ब–खुद परमेश्वर पर निर्भर होते जाएंगे।

हमारा प्रभु यीशु भी तो पिता पर निर्भर था। उन्होंने कहा *"..... पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है"* (यूहन्ना 5:19)। फिर जब लूका अध्याय 10 में उन्होने दो–दो करके चेलों को भेजा तो उन्हें कहा मार्ग के लिए कुछ न लेना *न बटुका, न झोली और न जूते लो और न मार्ग में किसी को नमस्कार करो (लूका 10:4)*। असल में यीशु उन्हें परमेश्वर पर निर्भर होना सिखा रहे थे।

क्या उसी यीशु ने आपको नहीं भेजा? फिर आप क्यों संसार पर, मनुष्य पर या अपनी इच्छा पर निर्भर होना चाहते हो। ध्यान दीजिए यदि आप परमेश्वर पर निर्भर रहेंगे तो आप उत्साहित रहेंगे। और हां आपका उत्साह आपको सफलता दिलायेगा।

"इसलिए परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए" (1पतरस 5:6)

"प्रभु के समने दीन बनो तो वह तुम्हें शिरोमणि बनाएगा" (याकूब 4:10)

" अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है" (1पतरस 5:7)

पहले सा प्रेम

प्रभु यीशु जब इस दुनिया में थे उन्होंने परमेश्वर से प्रेम करना सिखाया और उनके चेलों ने प्रेम रखा भी। बड़े से बड़े सताव और कष्ट में भी उन्होने उस प्रेम को नहीं छोड़ा। पर एक समय आया जब प्रभु यीशु मसीह को यूहन्ना के द्वारा कलिसीया को यह सन्देश देना पड़ा कि *"....तू ने अपना पहिला सा प्रेम छोड़ दिया है" (प्रकाशितवाक्य 2:4)*। कौन सा प्रेम जो उसने रखना सिखाया था। यह प्रेम कम हो जाने के कारण कई विश्वासी और सेवक निरुत्साहित प्रतीत होने लगते हैं। प्रेरित कभी निरुत्साहित नहीं हुए क्योंकि उन्होंने उस प्रेम को नहीं छोड़ा। वो परमेश्वर के प्रेम में लगातार बने रहे।

आपको आत्मिक उत्साह से भरने के लिए मैं आपके अन्दर उसी पहले से प्रेम को फिर से जगाना चाहता हूँ। प्रभु यीशु ने सिखाया कि *"तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख" (मति 22:37)*।

यह प्रेम रखें कैसे

सारे मन – सारे मन को समझने के लिए हमें अधूरे मन को समझना होगा। जब आप अपने बच्चे को घर में झाड़ू लगाने को कहते है, पर झाड़ू लगाने के लिए उसका मन न हो, तो वो झाड़ू कैसे लगाएगा। ऊपर–ऊपर से मोटा–मोटा कर के छोड़ देगा। जबकि झाड़ू साभी कौनों में और सामान के नीचे जा सकता है। पर कारण क्या है – अधूरा मन और उसका परिणाम क्या हुआ – अधूरा काम।

कुछ विश्वासी भी इसी प्रकार परमेश्वर से अधूरे मन से प्रेम करते हैं। जब आप संसार और उसके काम करते हो और चर्च में आकर कहते हो मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूँ वह अधूरा प्रेम है। जब आप पाप करते रहते हो और प्रार्थना में परमेश्वर को कहते हो मैं आपसे प्रेम करता हूँ वह अधूरा प्रेम है, जब आप अपने आपको पहला स्थान देते हो और परमेश्वर से कहते हो मैं प्रेम करता हूँ वह अधूरा प्रेम है।

जब आप खुद को पूरा पवित्र करके आएंगे, जब आप पूरे समर्पण के साथ आएंगे वो ही होगा *सारे मन से प्रेम* करना।

सारे प्राण – प्राण का अर्थ है जीवन और सामर्थ। आपने ज़रूर ध्यान दिया होगा दो लोग एक ही काम को करते हैं पर एक आधा ज़ोर लगाता है और असफल हो जाता है। पर दूसरा उसी काम को पूरा ज़ोर लगाकर करता है और सफल हो जाता है। ऐसा कोई न कोई मोका आपने भी खोया होगा, जब कोई दूसरा व्यक्ति आपसे आगे निकल गया होगा।

कुछ लोग ऐसे ही आधे ज़ोर के साथ परमेश्वर से प्रेम करते हैं। मैंने विश्वासियों को इस दुनिया की आशीष पाने के लिए अपना पूरा ज़ोर लगाते देखा है, पर स्वर्गीय आशीष के लिए आधा ज़ोर भी लगाने की कोशिश नहीं करते। यह शरीर तो कहेगा मैं बीमार हूँ, थका हुआ हूँ, दर्द है, कल करेंगे, आज रहने दें पर आपको पूरा ज़ोर लगाना है। आपको शरीर को उत्तर देना है कि काम पर भी तो गया था, टीवी भी तो देखा था, अरे सारे काम तो करके आया है तो परमेश्वर के लिए इसे भी कर, यही होगा *पूरे प्राण से प्रेम* करना।

सारी बुद्धि – बुद्धि यानी विचार और भावनाएं। किसी भी नए काम को करने के समय लोग अक्सर कहते हैं चलो मन बना लो फिर बता देना। बहुत से मसीही हैं जो आज तक मन ही नही बना पाए की उन्हें परमेश्वर के पीछे चलना है। उन्हें चर्च में सब पसन्द है, बाइबल में सब अच्छा लगता है, यीशु पर विश्वास भी है पर अभी भी सोच रहे हैं कि अरे पहले ज़िम्मेवारियां निभा लूं, पहले दुनियादारी पूरी कर लूं, पहले ये पहले वो कर लूं। पर क्या आपने कभी सोचा है कि उससे पहले प्रभु आ जाए या आप प्रभु के पास चले गए, तो क्या होगा। धरती पर सब कुछ प्राप्त करके अपनी आत्मा को खो दिया तो क्या लाभ?

यदि प्रभु से प्रेम है तो वचन पढने का मन बनाइये, परमेश्वर से रिश्ते को चाहते हैं तो प्रार्थना का मन बनाइये, आशीषों को पाना चाहते हैं तो चर्च जाने का मन बनाइये, उसकी उपस्थिति को चाहते हैं तो लगातार उसकी स्तुति आराधना करने का मन बनाईये, परमेश्वर के पीछे पूरी तरह चलने का मन बनाइये यही होगा *सारी बुद्धि से प्रेम* करना।

जब आपके अन्दर यह प्रेम जागृत होगा, आपके अन्दर से परमेश्वर का वो प्रेम बहने लगेगा जो उसने इस जगत से किया (यूहन्ना 3:16)। आपके अन्दर से यीशु का वो प्रेम बहने लगेगा जिसके वसीले वो क्रूस पर चढ़ गये (रोमियों 5:8)। वही स्वर्गीय प्रेम आपके अन्दर से लोगों को मिलना शुरु होगा। आपके शब्दों के द्वारा, बातों के द्वारा, प्रचार द्वारा उसी सिद्ध प्रेम

को जो आदि से था लोग ग्रहण करेंगे। जब आप प्रभु यीशु द्वारा दी इन दो आज्ञा को पुरा कर लेगें तो जिसमें सारी व्यवस्था पूरी हो जाती है कि *"तू परमेश्वर अपने प्रभु से सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख"* और दूसरी कि *"तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख" (मति 22:37–39)*।

"जागृत हो, और उन वस्तुओं को जो बाकी रह गई हैं और जो मिटने को हैं, उन्हे दृढ़ कर; क्योंकि मैं ने तेरे किसी काम को अपने परमेश्वर के निकट पूरा नहीं पाया" (प्रकाशितवाक्य 3:2)

"... परमेश्वर प्रेम है" (1यूहन्ना 4:8)

"प्रेम कभी टलता नहीं ..." (1 कुरिन्थियों 13:8)

अपनी बुलाहट की पहचान

मैंने दूसरे अध्याय में बताया था कि हम सबको प्रेरितों की सेवा में भागी होना है और उसी सेवा को करना है। तो भी मसीह यीशु में परमेश्वर ने हम सबको एक उद्देश्य के साथ बुलाया है। यह उद्देश्य ही हमारी बुलाहट है। हम सब के जीवन से परमेश्वर उस कार्य को पूरा करवाना चाहते हैं। और उस खास कार्य को पूरा करने के लिए परमेश्वर हमें अभिषेक, सामर्थ, अधिकार आदि सब प्रदान करते है। पर बहुत से मसीही उस बुलाहट को न समझ पाने के कारण निरुत्साह हो जाते हैं। मैंने बहुत बार मसीहियों को यह कहते सुना है कि शायद यह मेरी बुलाहट नहीं है। अधिकतर मामलों में ऐसा होता भी है क्योंकि वह जो आराधना, सुसमाचार, अगुवाई कर रहे होते है किसी के कहने पर या किसी से प्रभावित होकर कर रहे होते है।

परन्तु अपनी बुलाहट को समझने का सर्वोत्तम और आसान तरीका है अपने अभिषेक को जानना। आप सोच रहे होंगे कि यह कैसे हो सकता है परमेश्वर पहले बुलाएंगे तभी तो अभिषेक करेंगे। हां यह सत्य है और मैं भी विश्वास करता हूँ कि अभिषेक से पहले हमारे जीवन में बुलाहट आती है। परन्तु जब आपका अभिषेक सक्रिय होगा तभी बुलाहट का पता चलेगा। जब आप अपने अभिषेक को व्यवहार में लाओगे या उसके अनुसार कार्य करोगे तो बुलाहट उभर कर बाहर आएगी। तब आपको सोचना नहीं पड़ेगा पर लोग आपको वैसे ही बुलाने लगेंगे। *और तुम्हारा वह अभिषेक, जो उस की ओर से किया गया, तुम में बना रहता है; और तुम्हें इस का प्रयोजन नहीं, कि कोई तुम्हें सिखाए, वरन जैसे वह अभिषेक जो उस की ओर से किया गया तुम्हें सब बातें सिखाता है, और यह सच्चा है, और झूठा नहीं: और जैसा उस ने तुम्हे सिखाया है वैसे ही तुम उस में बने रहते हो (1यूहन्ना 2:27)*।

तो सबसे पहले आपको अपने अभिषेक को सक्रिय करना है। और इसके लिए वचन पढ़ें और प्रार्थना में समय बिताएं। फिर आप *जो कुछ करते हो, तन मन से करो, यह समझकर कि मनुष्यों के लिए नहीं परन्तु प्रभु के लिए करते हो (कुलुस्सियों 3:23)*। यानी परमेश्वर के राज्य में आपको जो सेवा मिले उसे करें जैसे पौलुस भी कहते हैं जिसे जो वरदान मिला है उसके अनुसार सेवा करता रहे (रोमियों 12:6–8)। यदि आपको लीडिंग का मौका मिले लीडिंग करें, प्रार्थना का मौका मिले प्रार्थना करें, गीत का मौका मिले तो गीत गाएं, आराधना का मौका मिले आराधना करें, प्रचार का मौका मिले तो प्रचार करें, सण्डे स्कूल चलाने का मौका मिले तो चलांए

पर यह समझकर कि मनुष्यों के लिए नहीं परन्तु प्रभु के लिए करते हो। फिर आपकी जिस सेवकाई के द्वारा आपकी नहीं परन्तु परमेश्वर की महिमा हो वो अभिषेक आप पर है। ध्यान दीजिए आपके द्वारा जिस सेवकाई को निभाते समय आपको अभिषेक, पवित्र आत्मा की भरपूरी, छुटकारा, चमत्कार आदि महसूस हो वो ही अभिषेक आप पर है। क्योंकि उस समय परमेश्वर वहां आपके साथ होकर कार्य कर रहे होंगे और परमेश्वर का आपके साथ होना इस बात का चिन्ह है कि यही सेवकाई आपकी बुलाहट है। पर उस समय शैतान भी आपको मनुष्य द्वारा, पाप द्वारा, अभिलाषा द्वारा, वस्तुओं द्वारा या पैसे द्वारा संतुष्ट करने की कोशिश करेगा। जब शैतान आपको इनके द्वारा नियंत्रण करने की कोशिश करे ऐसे समय में इन वस्तुओं का नियंत्रण भी परमेश्वर को दे दें। आपको नियंत्रण करने वाला अपने आप परमेश्वर के अधीन हो जाएगा, वो तिलमिला उठेगा और उसे भागना पड़ेगा (याकूब 4:7)।

यीशु ने चेलों को यह कहने से पहले कि *देखो मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूँ (मति 28:20)* उन्हें महान आदेश दिया जो उन्हें मानना था। यानि यीशु का चेलों के साथ होने के लिए उन्हे पहले वो करना था जो उन्हें कहा गया था। और जब उन्होंने वैसा किया तो लिखा *प्रभु उनके साथ काम करता रहा (मरकुस 16:20)*। हाल्लेलुइया, इसे लिखते समय मैं सामर्थ को महसूस कर रहा हूँ। जब आप वो करते है जिसकी बुलाहट आप पर है तो यीशु आपके साथ कार्य करेंगे ही। अपने अभिषेक और बुलाहट के लिए उत्साहित हो जाएं, अपने वरदान को चमका दें और इसके बाद आप कभी नहीं कहेंगे कि यह मेरी बुलाहट नहीं। क्योंकि यीशु आपके संग हैं।

"क्योंकि परमेश्वर के वचदान और बुलाहट अटल हैं" (रोमियों 11:29)

"उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कुछ को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कुछ को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया" (इफिसियों 4:11)

अपने अदन को समझना और उसमें काम करना

परमेश्वर ने जब आदम को मिट्टी से रचा और उसे अदन की वाटिका में रखा। फिर उसे सारी वाटिका और सब जानवरों पर अधिकार दिया। उस वाटिका में एक नदी बहती थी जो चार भागों में बंट जाती थी (उत्पति 2:10) और पूरी वाटिका को सींचती थी।

नए नियम में परमेश्वर ने आपको अधिकार दिया है (मरकुस 16:15) और आपको एक क्षेत्र में रखा है। आपकी पढ़ाई आपका क्षेत्र हो सकता है, आपका काम/व्यवसाय आपका क्षेत्र हो सकता है, आपका घर आपका क्षेत्र हो सकता है। आप जो कर रहे हैं या परमेश्वर ने जहां आपको रखा है वो आपका अदन ही है। इसलिए इस्रायलियों के समान बुड़बुड़ाने की भूल न करें कि परमेश्वर ने मुझे यहां क्यों रखा है। क्योंकि आपके क्षेत्र पर अधिकार और सामर्थ देकर परमेश्वर ने आपको वहां रखा है। आप अपने क्षेत्र (अदन) में फाड़ खाने वाले सिंह के समान घूम रहे शैतान को अधिकार सहित बांध सकते हो और निकाल सकते हो।

आपको उस अधिकार का प्रयोग करना है, जो आपके अदन में काम कर रही हर अंधकार की शक्ति को, सारे गढ़ों को और जो लोगों पर उनका प्रभाव है उस प्रभाव के ऊपर आपको अपने अधिकार का इस्तेमाल करना है। आपका अधिकार बड़ा है, आपका अधिकार सीमा रहित है क्योंकि सर्वशक्तिमान परमेश्वर आपके साथ है। लेकिन आज अगुवे प्रार्थना करते रहते हैं परमेश्वर मेरे साथ काम करें, जबकि वो पहले से ही उनके साथ है।

मरकुस 16:20 बताता है कि प्रभु चेलों के साथ काम करता रहा। क्यों? क्योंकि वो अपने अदन में अपने अधिकार का इस्तेमाल कर रहे थे। परमेश्वर का इंतज़ार न करें क्योंकि परमेश्वर तो पहले ही आपका इंतज़ार कर रहे है। जब इस्रायएली यरदन पूर्व पहुचें तो वे एक माह तक मूसा के लिए रोते रहे। असल में उनके विलाप का एक बड़ा कारण उफान पर बहने वाली यरदन नदी थी जिसे वो मूसा की लाठी (अधिकार) के बिना पार नहीं कर सकते थे। पर वहां परमेश्वर ने कहा अपना कदम बढ़ाओ जैसे ही संदूक उठाए हुए याजको के पांव ने पानी को छुआ, उफान से बहती हुई नदी दो भाग हो गई। जब आप अपने अदन पर अपने अधिकार का प्रयोग करोगे तब परमेश्वर आपके साथ काम करेगा। और निसंदेह आप प्रतिउत्तर में चंगाई, छुटकारा, चमत्कार, जीवन परिवर्तन हां सब कुछ देखोगे।

मत भूलो कि परमेश्वर ने यह असीम सामर्थ हम मिट्टी के बरतनों में रखी है (2 कुरिन्थियों 4:7)। जिसे आपको इस्तेमाल करना है। पर कैसे? मैंने बहुत से प्रचारकों को कहते सुना

है कि जब यह बाहर का बरतन टूटेगा तब वो बाहर आएगा। पर ऐसा नहीं है। मैं उनकी आलोचना या खण्डन नहीं कर रहा हूँ। परन्तु मैं यह कहना चाहता हूँ कि इस बाहर के बरतन के टूटने के इंतज़ार में समय न गवाएं पर उसे अन्दर से सक्रिय करें। अन्दर से ज़ोर लगाएं, अन्दर से अधिकार का इस्तेमाल करें क्योंकि आत्मा शरीर से कहीं अधिक सामर्थी है।

अभी इसे पढ़ते समय आप जिस अभिषेक को महसूस कर रहे हो वही आत्मिक उत्साह है। इस प्रकार के आत्मिक उत्साह से भरी सेवा एक बेदारी की नदी को जन्म देगी। यह नदी आपके अदन की चारों दिशाओं (उतर– दक्षिण, पूर्व– पश्चिम) में बंट कर हर मोहल्ले, हर गली और हर घर में बह जाएगी। यह नदी बहुत सारी मच्छलियों (आत्माओं) को आपके पास ले आएगी। इसमें बह कर आने वाले हर धर्म, हर जाति, हर भाषा, हर रंग, हर क्षेत्र और हर वर्ग की आत्माओं से आपका घर भर जाएगा। और हां आपके लिए खुशखबरी है कि आप अपने अदन को बढ़ा भी सकते हो। आपका आत्मिक उत्साह जितनी दूर इस नदी को बहा पाएगा उतना यह फैलता जाएगा।

काम यहां समाप्त नहीं होता आपको परमेश्वर के वचन के अनुसार जातियों को मांगना है। *मुझ से मांग, और मैं जाति –जाति के लोगों को तेरी सम्पतिं होने के लिये, और दूर दूर के देशों को तेरी निज भूमि बनने के लिए दे दूंगा (भजन 2:8)*। अपने क्षेत्र के हर धर्म की हर जाति को परमेश्वर में एक होने के लिए मांगें। क्या पुरूष क्या स्त्री, क्या बच्चे क्या बूढ़े सबको मांगिए। परिणामस्वरुप आप बहुत जल्दी अपने अदन में हर प्राणी को समान रुप से पाएंगे।

फिर आखरी काम आपको अपने क्षेत्र को आशीष देना है, वहां के लोगों को आशीष देना है, वहां चल रहे सभी व्यवसाय को आशीष देना है। आपकी आशीष अंधकार को मिटा देगी और एक दिन वो आशीष किसी न किसी रुप में लौटकर आपके पास ज़रुर आएगी। यह लौटी हुई आशीष आपके आत्मिक उत्साह को कई गुणा बढ़ा देगी।

"... जिस जिस स्थान पर तुम पाँव धरोगे वह सब में तुम्हें देता हूँ" (यहोशू 1:3)

"जागते रहो, विश्वास में स्थिर रहो, पुरुषार्थ करो, बलवन्त होओ" (1कुरिन्थियों 16:13)

आपकी बुलाहट फल लाने के योग्य है

"तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना और तुम्हें नियुक्त किया कि तुम जाकर फल लाओ और तुम्हारा फल बना रहे..." (यूहन्ना 15:16)

एक बार कुछ अविश्वासी लोगों से एक खास विषय पर मेरी चर्चा हो रही थी। कुछ समय की बहस के बाद जब उन्हें कोई उत्तर नहीं मिला तो एक ने कहा भाई आप जो कह रहे हैं वह सही है पर एक बात तो आप भी जानते हो कि हमारी दुनिया आपकी दुनिया से अलग है। हां कितना सही कहा था उसने कि मसीही जीवन, आम जीवन से बिलकुल अलग है। एक आम जीवन कभी भी उन फलों को उत्पन्न नहीं कर सकता जो एक मसीही कर सकता है। पर जब एक मसीही के जीवन से कुछ उत्पन्न नहीं होता तो उसकी निराशा बढ़ने लगती है।

इस उत्पादक बनने के विषय में प्रभु यीशु मति 25 अध्याय में अच्छा उदाहरण देते हैं। वहां एक मालिक है जो व्यापार के लिए दूर देश जाता है और पीछे अपने तीन सेवकों को तोड़े देकर जाता है। काफी समय बीतने पर एक दिन अचानक मालिक आ जाता है और उनसे हिसाब मांगने लगता है। एक सवाल पूछ कर हिसाब नहीं मांगा होगा। पर एक के बाद एक सवाल पूछे होंगे। जिसे 5 तोड़े मिले थे उसने कहा कि मैंने 5 और कमाए, 2 वाले ने 2 और कमाए, क्योंकि इन्होंने अपनी योग्यता का इस्तेमाल कर 100 गुणा उत्पादक बने थे। पर जिसे 1 तोड़ा मिला था उसने कहा कि मैं जानता था कि तू कठोर मनुष्य है, और तू जहां नहीं बोता वहीं काटता है। असल में वह यह बहाने इसलिए बना रहा था क्योंकि वह उत्पादक नहीं था। उसने कहा मैं डर गया था। असल में डर आपके वरदान और योग्यता को जकड़ लेता है। मालिक ने कहा कि इसका 1 तोड़ा लेकर उसको दे दो जिसके पास 10 हैं और उसे कालकोठरी में डलवा दिया। क्यों? क्योंकि उत्पादक न होना पाप है।

मती 21:18–19 में लिखा *"भोर को जब वह नगर को लौट रहा था तो उसे भूख लगी। सड़क के किनारे अंजीर के पेड़ को देखकर वह उसके पास गया, और पत्तों को छोड़ उसमें और कुछ न पाकर उससे कहा, अब से तुझ में फिर कभी फल न लगें। और अंजीर का पेड़ तुरन्त सूख गया।"*

यह पेड विश्वासी के जीवन को दिखाता था जिसमें तना है, डालियाँ हैं, पत्ते हैं, फूल हैं पर फल नहीं है। उनके जीवन फलदार न होने के कारण ही उनके जीवन में श्राप काम करता

है। यदि आप चाहते है कि यह श्राप आपके जीवन में काम न करे तो आपको उत्पादक बनना होगा। इसलिए अब मैं आगे आपको कुछ बाते बताने जा रहा हूँ जिसके अभ्यास द्वारा आप उत्पादक बन पाएंगे।

1. उत्पादक बनने के लिए आपको जीवित बलिदान बनना होगा – *इसलिये हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है (रोमियों 12:1)* – पुराना नियम में कोई भी परमेश्वर के सामने बलिदान लिए बिना नहीं जा सकता था। पर नए नियम में वो सब हियाव के साथ परमेश्वर के सामने जा सकतें है जो जीवित बलिदान है। आपको परमेश्वर को स्तुति, आराधना, प्रार्थना का बलिदान चढ़ाना होगा। और अपने आप को भी जीवित बलिदान करके चढ़ाना होगा। और जब परमेश्वर को बलिदान चढ़ाया जाता है तो स्वर्ग से आग उतर कर उसे ग्रहण करती है। आपको तब तक आराधाना, प्रार्थना करना है जब तक स्वर्ग से आप पर पवित्रात्मा की आग न उतर आए। पर याद रखिए कि एक दिन बलिदान बन कर आग नहीं उतरेगी। आपको रोज़ स्तुति, आराधना, प्रार्थना करना है, फिर इस निरंतर बलिदान को देख कर परमेश्वर अपनी आग आप पर उतारेंगे।

और जब आप जीवित बलिदान बनते है तो परमेश्वर आपमें से होकर काम करता है। पुराने समय में जब दो लोग वाचा बांधते थे तो उस समय एक जानवर को दो भाग करके उसके बीच में से चल कर वाचा बांधते थे। जिसे परमेश्वर भी यिर्मयाह 34:18 में दोहराते है कि *"जो लोग मेरी वाचा का उल्लंघन करते हैं और जो प्रण उन्होंने मेरे सामने और बछड़े के दो भाग करके उसके दोनों भागों के बीच से जाकर किया परन्तु उसे पूरा न किया।"*

परमेश्वर ने भी अब्राहम से इसी रीति वाचा बांधी थी। उत्पत्ति 15:10–12 अब्राहम परमेश्वर की आज्ञा अनुसार *"सभी जानवरों को लेकर बीच से दो टुकडे कर दिया, और टुकड़ों को आमने–सामने रखा; पर चिड़ियों के उसने टुकड़े नहीं दिए। जब मांसाहारी पक्षी लोथों पर झपटे, तब अब्राहम ने उन्हें उड़ा दिया। जब सूर्य अस्त होने लगा, तब अब्राहम को भारी नींद आई; और देखो, अत्यन्त भय और महा अन्धकार ने उसे छा लिया"*। परमेश्वर ने अब्राहम को भारी नींद में डाल दिया और उसमें से होकर उन टुकड़ों के बीच से चल कर अब्राहम से वाचा बांधी। जब आप परमेश्वर के लिए जीवित बलिदान बनते हो तो परमेश्वर आपमें से चलना शुरु

करता है। आपमें से चमत्कार और अद्भुत काम होने लगते है। आप परमेश्वर के लिए फलदार बनने लगते हैं।

2. उत्पादक बनने के लिए आपको मरना होगा – *मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है; परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है (यूहन्ना 12:24)* – एक बार एक किसान गेहूँ के दानों को लेकर उन्हे बीज़ने के लिए ले जा रहा था। उसमें एक गेहूँ के दाने ने दूसरे से पूछा यह हमें कहां लेकर जा रहे हैं। दूसरे ने जवाब दिया कि यह हमें लेजाकर भूमि में गाडेंगे और हम मर जाएंगे। पहले दाने ने कहा मुझे नहीं मरना और वो कूद कर पीछे चला गया। लेकिन वह दूसरा दाना आनन्द के साथ किसान के साथ चला गया। कुछ दिन बाद जब कटनी का समय आया तो वह दाना एक बडी दानो की टोकरी के साथ वापिस आया। उसने पहले दाने से कहा देख मैं मर कर इतनों को लेकर आया हूँ। परमेश्वर ने जब सृष्टि को बनाया तो हर जाति का बीज़ उसी में रखा (उत्पत्ति 1:12)। आपके अन्दर भी परमेश्वर ने अविनाशी बीज़ को रखा है जो उसका जीवित और सदा ठहरनेवाला वचन है (1पतरस 1:23)। जब एक नाशवान बीज़ इतना फल ला सकता है तो आपमें का अविनाशी बीज़ कितना फल लाएगा। पर फलदार बनने के लिए आपको भी मरना होगा। आपको इस संसार के लिए, पाप के लिए, शरिर के लिए मरना होगा। जब आप मरेंगे तो आप फल लाएंगे। जो मरे नहीं वो चर्च छोड़ कर चले गए, प्रभु से पीछे हट गए, विश्वास में गिर गए, किसी को आज तक प्रभु में नहीं लाए। पर जो मर गया वो फलदार बना।

जब आप मरते हैं तो यीशु आपकी जड़ बनता है, उसका लहू, उसकी सामर्थ, उसका जीवन आपकी जड बन जाता है और आप ज़रुर फलदार बनते हैं।

3. आराधना – लगातार आराधना करते रहें। मैं अक्सर परमेश्वर के सामने पवित्र आत्मा के लिए रोया करता था। हमारी पास्टर मीटिंग में प्रभु के एक जन बाहर देश से आए। जब हम सभी पास्टर आराधना करके अपने अपने घर चले गए तो पीछे से मेरी आराधना को देखकर उन्होंने मेरे सीनियर पास्टर से कहा कि इसमें पवित्र आत्मा है। जब यह बात उन्होंने मुझे बताई तो मैं हैरान हो गया कि मैं तो परमेश्वर के सामने रोता हूँ जबकि उस जन ने कहा कि मुझ में पवित्र आत्मा है। ऐसा एक बार नहीं पर दो बार हुआ। हमेशा याद रखिए कि परमेश्वर की

उपस्थिति से भरे रहने की कुंजी आराधना है। पर हो सकता है कि आप थक जाएं या आपको बोझ महसूस होने लगे। ऐसे समय पर अलग भाषा में आराधना करना शुरु कीजिए। जैसे मुझे अंग्रेजी, हिन्दी और पंजाबी भाषाएं आती हैं। जब मैं थकावट या बोरीयत को महसूस करता हूँ तो अलग भाषा का प्रयोग करने लगता हूँ और अन्य भाषा का भी।

आप जब लगातार आराधना करते हो तो परमेश्वर से भरे रहते हो। इसलिए हर समय आराधना करते रहें। आराधना ईंधन के रुप में कार्य करती है और आपको हमेशा *आत्मिक उन्माद से भरे रखेगी (रोमियों 12:11)*। आपकी *आत्मा को बुझने नहीं देगी (1थिस्स्लुनीकियों 5:19)*।

परमेश्वर के राज्य में आप एक उत्पादक हैं। परमेश्वर को आपके लिए नहीं पर आपको परमेश्वर के लिए उत्पन्न करना है। आप आत्माओं के उत्पादक हैं, सामर्थ और अद्धभुत कामों के उत्पादक हैं। आप कुछ भी करते हो उसमें उत्पादक की इस सामर्थ को प्रज्वलित कर दो और हमेशा आशा रखें कि फल आएगा ही आएगा।

अपने आत्मिक उत्साह को जागृत कर दें। क्योंकि यदि किसी को निरुत्साहित होने का हक होता तो वो मैं होता। क्योंकि मैं जब 8 महीने का ही था तब मेरे सीधे पांव में पोलियो हो गया था। खेलकूद की उम्र में मेरा कोई दोस्त नहीं था, कोई प्यार करने वाला नहीं था, कोई सहयोग करने वाला नहीं था, बस थी तो कुछ लोगों की सहानुभुति। जब प्रभु को जाना और सेवा करने लगा तब भी कई बार शैतान ने मुझे निरुत्साहित करने की कोशिश की तेरी सेवा नहीं बढ़ेगी। तू खुद विकलांग है दूसरे कैसे तेरे पास चंगाई के लिए आएंगे। उस समय परमेश्वर ने मुझे यह कह कर उत्साहित किया कि स्वर्ग में तेरे पास दोनों पांव होगें। परन्तु पापी, निराश और निरुत्साहित लोग नरक में होगें (प्रकाशितवाक्य 21:8)। जी हां निरुत्साह आपको विकलांग बना देगा, आपके आत्मिक जीवन को विकलांग बना देगा, आपकी सेवा को विकलांग बना देगी। *क्या तुम ऐसे निर्बुद्धि हो कि आत्मा की रीति पर आरम्भ करके अब शरीर की रीति पर अन्त करोगे (गलातियों 3:3)*। इस जूए को अभी तोड़ दीजिए। अपने आपको खुद उत्साहित करें। *इसलिए जब हम पर ऐसी दया हुई कि हमें यह सेवा मिली तो हम हियाव नहीं छोड़ते (2 कुरिन्थियों 4:1)*। *परमेश्वर की ऐसी जाति बने जो सब कामों में सरगर्म हो (तीतुस 2:14)*।

सामर्थ का इस्तेमाल करना

"प्रभु में और उस की शक्ति में बलवन्त बनो" (इफिसियों 6:10)

आपने ध्यान दिया होगा कि जब बच्चे वीडियो गेम खेलते हैं तो उसमें वो पावर हासिल करने के पिछे लगे रहते हैं। क्योंकि वो जानते हैं कि पावर हासिल करके वो जल्दी जीत सकते हैं। अगर एक गेम को जीतने के लिए पावर की ज़रुरत है, तो शैतान के विरुद्ध इस आत्मिक युद्ध में आपको कितनी सामर्थ की ज़रूरत है।

हम सामर्थ को एक शब्द में समाप्त कर देते हैं, परन्तु इसके कई विभाजन हैं। इस अध्याय में मैं उन विभाजन के बारे में बता कर उसे इस्तेमाल करना भी बताऊंगा। कोई माने या न माने पर जीवन के हर दिन में हमें सामर्थ की ज़रूरत पड़ती है। चमत्कार पर विश्वास न करने वाले लोग भी चमत्कार की आशा रखते हैं। इसीलिए तो जब कोई सामर्थी प्रभु का दास चमत्कार की सेवकाई के साथ आता है तो सब उसकी तरफ आकर्षित होते हैं और उस सभा में पहुंच जाते हैं।

आज आप अपने चारों तरफ देखेंगे तो पाएंगे कि हर कलीसिया में सामर्थ के काम हो रहे हैं। परमेश्वर हर जगह पर चंगाई, छुटकारा, आशीष, चिन्ह और चमत्कार कर रहे हैं। तो भी कुछ ऐसे मसीही लोग हैं जो इन सामर्थ के कामों को नकारते हैं तथा इन कामों का विरोद्ध करते हैं। पर ज़रा ध्यान दें कि क्या हमारे प्रभु यीशु की सेवकाई सिर्फ प्रचार थी? नहीं असल में यीशु वो सिखाते थे जो वह करते थे (प्रेरितों के काम 1:1)। संत पौलुस भी इस विश्य में चेतावनी देते हैं कि अन्त के दिन में ऐसे लोग आएंगे जो *"भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उस की शक्ति को न मानेंगे; ऐसों से परे रहना" (2 तिमुथियुस 3:5)*।

इसीलिए इस पुस्तक के ज़रिए मैं चाहता हूँ कि आप ऐसे उत्साहित हो जाएं कि यह सामर्थ की सेवकाई आप भी करने लगें। इसीलिए मैंने तीसरे अध्याय में कहा भी था कि आपको कहना नहीं है पर करके दिखाना है। यदि कोई अन्य व्यक्ति कर सकता है तो आप भी कर सकते हैं। क्योंकि जो सामर्थ प्रारम्भिक कलीसिया के पास थी वो आपके पास भी है। इसीलिए बाइबल कहती है कि *"एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है. एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा (इफिसियों 4:4–5)*। तो जब आपकी आशा और विश्वास उनकी आशा और विश्वास दोनों एक

समान हैं। जो आत्मा उन्होंने पाया था जब वही आत्मा आपने पाया है। तो उनका सामर्थ आपके सामर्थ से भिन्न कैसे हो सकता है। सही मायनों में यीशु के क्रूसीकरण और पुनरुत्थान पर विश्वास करने के द्वारा वह सामर्थ आपमें पहले से मौजूद है। प्रार्थना करने वाला हर व्यक्ति स्वर्ग की सारी सामर्थ का इस्तेमाल कर सकता है। ज़रुरत है तो उस सामर्थ को समझने की और उसे सक्रिय करके इस्तेमाल करने की।

1. यीशु के नाम की सामर्थ – *वे सतर आनन्द से फिर आकर कहने लगे, हे प्रभु तेरे नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में है (लूका 10:17)।* यीशु के नाम में सामर्थ है। क्योंकि यीशु ने पाप को और मौत को हराया है, यीशु ने कलवरी क्रूस पर शैतान का खुलमखुला तमाशा बनाया है, सिर्फ यीशु ही वो नाम है जो स्वर्ग के नीचे मनुष्यों के बिच में उद्धार के लिए दिया गया है। उद्धार का एक अर्थ छुटकारा भी है। हर बार आप जब किसी के लिए प्रार्थना करें तो सबसे पहले उसके जीवन से यीशु के नाम में श्रापों और बन्धनों को तोड़ें। क्योंकि यदि पुराने बन्धन और श्राप तोड़े न जाएं तो चंगाई मिलना कठिन हो जाता है। फिर उसकी चंगाई के लिए यीशु के नाम में प्रार्थना करें। याद रखें हर बार जब आप यीशु का नाम लेते हो तो उसमें से सामर्थ निकलती हैं। फिर कोई भी बीमारी, कोई भी दुष्टात्मा या कोई भी परिस्थिति इस सामर्थ के सामने टिक नहीं सकती, कोई पहाड़ इस सामर्थ के सामने टिक नहीं पाएगा (जकर्याह 4:7), बड़े से बड़ा समुद्र भी इस सामर्थ के सामने टिक नहीं पाएगा (निर्गमन 14), यह सामर्थ शेरों का भी मुंह बन्द कर देगी (दानिय्येल 6)।

2. वचन की सामर्थ – *"वह अपने वचन के द्वारा उनको चंगा करता ..." (भजन संहिता 107:20)* – परमेश्वर का वचन सामर्थी और प्रभावशाली है। परमेश्वर का वचन कभी खाली नहीं लोटता (यशायाह 55:11)। हर बार जब आप वचन बोलते हैं उसमें से एक सामर्थ निकलती है जो हर मुश्किल को, हर बीमारी को, हर तूफान को पिछे की ओर धकेलती है। मरकुस 11:23 में चेलों को सिखाते समय यीशु ने भी कहा *"जो कोई इस पहाड़ से कहे"*, आपको भी सामर्थ के वचन बोलना है। अपनी परिस्थिति के आधार पर वचन खोजें और उसके अनुसार प्रार्थना करना आरम्भ करें। उसे बार–बार बोल कर अंगीकार करना शुरु करें। वचन की सामर्थ सारे बन्धनों को तोड़ देगी।

3. पवित्र आत्मा की सामर्थ – *"जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे...." (प्रेरितों के काम 1:8)* – पवित्र आत्मा परमेश्वर की सामर्थ है। अध्याय 2 में मैं पवित्र आत्मा के विश्य बहुत कुछ पहले बता चुका हूँ, अब उसकी सामर्थ पर मनन करते हैं। प्रभु यीशु पर विश्वास करने के साथ ही पवित्र आत्मा आपको मिल जाता है। पर इसका होना काफी नहीं है, आपको इसकी भरपूरी चाहिए। जब पवित्र आत्मा भरपूरी का सोता बन कर आपमें बहने लगता है, तब सामर्थ भी बहने लगती है। अब प्रश्न उठता है कि आप पवित्र आत्मा को भरपूरी तक कैसे ले जाएं। उसके लिए सबसे ज़रुरी है आत्मा में प्रार्थना करना यानी अन्य भाषा में प्रार्थना करना।

पुरी बाइबल में परमेश्वर की ओर से हम सिर्फ एक गड़बड़ी को देखते हैं और वो है भाषा में गड़बड़ी। जब लोग शिनार देश में इक्टठे होकर कहने लगे कि *"आओ, हम एक नगर और एक गुम्मट बना लें, जिसकी चोटी आकाश से बात करे, इस प्रकार से हम अपना नाम करें ऐसा न हो कि हम को सारी पृथ्वी पर फैलना पड़े" (उत्पत्ति 11:4)*। परमेश्वर जो इस काम से प्रसन्न नहीं थे तो उन्होंने कहा *"हम उतर के उनकी भाषा में बड़ी गड़बड़ी डालें...." (उत्पत्ति 11:7)*। अतः परमेश्वर ने उनकी भाषा में गड़बड़ी डाल कर वहां उनकी बुराई के इस काम को खत्म किया। तत्पश्चात प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर पाप को पूरी तरह खत्म करके मानव जाति को आत्मिकता में एक कर दिया। तब परमेश्वर ने आत्मिकता में एक हुए लोगों को पवित्र आत्मा में एक भाषा दी, जो है अन्य भाषा का वरदान।

अब जो अन्य भाषा में प्रार्थना करता है वो मनुष्य से नहीं परन्तु परमेश्वर से बातें करता है (1कुरिन्थियों 14:2)। अन्य भाषा में प्रार्थना के दौरान पवित्र आत्मा (परमेश्वर) खुद परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं (रोमियों 8:26–27)। आत्मा में प्रार्थना करने वाला सामर्थी होता जाता है। पवित्र आत्मा की सामर्थ को इस्तेमाल करते समय एक बात अपने मन में हमेशा याद रखें कि यह आरम्भ से परमेश्वर के साथ है। पवित्र आत्मा द्वारा सृष्टि बनी, पवित्र आत्मा भविष्यवाणी देता था, वचन को लिखने की प्रेरणा पवित्र आत्मा ही देता था, पवित्र आत्मा ही से यीशु का जन्म हुआ, पवित्र आत्मा के ज़रिए ही यीशु का पुनरुत्थान हुआ, पवित्र आत्मा ही वरदान, फल, अभिषेक और सामर्थ का स्त्रोत। इस आत्मा में होकर आप जिसके लिए भी प्रार्थना करेंगे वो 100 प्रतिशत कार्य करेगी।

4. सृष्टि की सामर्थ – उत्पत्ति की पुस्तक अध्याय 1 में हम परमेश्वर की सृष्टि की सामर्थ को देखते हैं। परमेश्वर ने सृष्टि को बनाया और उसका सारा अधिकार मनुष्य को दे दिया। इसीलिए पहले अध्याय में परमेश्वर ने स्वयं वस्तुओं के नाम रखे और दूसरे अध्याय में परमेश्वर ने आदम को नाम रखने को कहा (उत्पत्ति 2:19) और वही उनके नाम हो गए। परमेश्वर चाहते हैं कि हम मनुष्य सृष्टि की सामर्थ का इस्तेमाल करें। पर कैसे? ध्यान दीजिए मसीह यीशु के मारे जाने, गाड़े जाने और जी उठने पर विश्वास करने के द्वारा आप नई सृष्टि बन जाते है, *"सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं" (2 कुरिन्थियों 5:17)*।

इस नई सृष्टि की सामर्थ का आपको ठीक वैसे ही इस्तेमाल करना है जैसे उत्पत्ति की पुस्तक अध्याय 1 में परमेश्वर ने किया था। जब एक व्यक्ति आपके पास आए जिसका कोई अंग बीमारी, आपॅरेशन या दुर्घटना के कारण खराब हो गया हो या निकाल दिया गया हो। ऐसे व्यक्ति के शरीर में आप इस सृष्टि की सामर्थ को खोलें और उस अंग को नया होनी की या उत्पन्न होने की आज्ञा दें। प्रार्थना करते समय आपको यह विश्वास रखना है कि ऐसा ही होगा। जिसका नतीजा होगा नए अंग का जन्म लेना।

5. परमेश्वर का सामर्थी प्रकाश – *"...वह जानता है कि अन्धियारे में क्या है, और उसके संग सदा प्रकाश बना रहता है" (दानिय्येल 2:22)* – जो अन्धकार में पड़े है उनके लिए ज्योति एक सामर्थ है। मसीह यीशु पर विश्वास करने वाले भी ज्योति है (मति 5:14) और आप इस ज्योति का इस्तेमाल सामर्थ के रूप में कर सकते हो।

एक बार एक बहन से मैं बात कर रहा था जो कई वर्षो से किसी सत्संग से जुड़ी हुई थीं। पर उनका घर पूरा अन्धकारमय था। उनके घर में कोई आशीष नहीं थी। बात करते समय उन्होनें कहा कि मैं तो बहुत पहुंची हुई हूँ। मैंने उस सत्संग और वहां से मिली दीक्षा से कई अनुभव प्राप्त किए हैं। फिर मैंने उस से कहा जो आप कह रहीं है शायद वो ठीक हो, पर मुझे एक बात बताएं जो प्रकाश आपके अन्दर है वो निकल कर क्यों आपके घर से अन्धकार को नहीं मिटा पा रहा। उनके पास इसका तो कोई जवाब नहीं था। पर मैं आपको बताता हूँ, सिर्फ यीशु ही सच्ची ज्योति है (1 यूहन्ना 1:5; 1तीमुथियुस 6:16; प्रकशितवाक्य 1:15)।

इसलिए जब कोई व्यक्ति आपके पास आए और आपको लगे वो अन्धकार के अधीन

है या अन्धकार उसके जीवन में काम कर रहा है। उस समय प्रार्थना करते समय परमेश्वर के प्रकाश को उसके जीवन में खोल दें। अन्धकार के कारण उसके जीवन में आए सारे हालात बदल जाएंगे, वो और उसका घराना प्रकाशमान होता जाएगा।

6. पुनरुत्थान की सामर्थ – *यीशु मसीह को स्मरण रख, जो दाऊद के वंश से हुआ, और मरे हुओं में से जी उठा (2 तिमुथियुस 2:8)*। प्रभु यीशु मसीह जब मुर्दो में से जी उठे तब सभी चेले उन्हें देखना चाहते थे। कुछ यीशु की कब्र की तरफ दौड़े गए और कुछ इक्टठे होकर उसे देखने के विषय में विचार कर रहे थे। पर क्या आप यीशु के पुनरुत्थान को देखने के लिए उत्साहित हो। क्योंकि सामर्थ में चलने की कुंजी यही याद रखना है कि यीशु मुर्दो में से जी उठे। आपको न सिर्फ याद रखना है परन्तु अंगीकार भी करना है कि यह सामर्थ आपके अन्दर है (1पतरस 1:23; 2कुरिन्थियों 5:17; 2 कुरिन्थियों 4:7)।

गिनती की पुस्तक अध्याय 13 में जब मूसा ने 12 लोगों को कनान देश का भेद लेने के लिए भेजा था तो उनमें से 10 ने आकर कहा कि उस देश के निवासी बलवान हैं और बड़े डील डौल के हैं, उनके नगर गढ़वाले हैं और बहुत बड़े हैं और हम तो उनके सामने टिड्डे के समान हैं। परन्तु इन सब बातों का वर्णन करते समय वो एक बात भूल गए कि वे सब वहां से जीवित वापिस आएं हैं। अगर वाकई वह देश उनके लिए इतना विपरीत परिस्थितियों से भरा होता तो वह कभी जीवित वापिस नहीं आते। अपने जीवन या सेवकाई में जब आप विपरीत परिस्थितियों का सामना करो तो याद रखना कि *"जो मुझ में है वो उस से जो संसार में है, बड़ा है" (1यूहन्ना 4:4)*।

अतः जब आप कुछ भी मुर्दा देखें जैसे कि मृत अंग, मृत आशीष या किसी मृत व्यक्ति के लिए प्रार्थना करना हो तो उस समय वहां पर पुनरुत्थान की सामर्थ की घोषणा करें और उन्हें पुनर्जीवित होने की आज्ञा दें। मसीह के जीवन के कारण वहां से मुर्दापन निकल जाएगा और आपके देखते–ही–देखते सब कुछ जीवन पाने लगेगा।

मैंने आपको सामर्थ के बारे में कुछ ही बातें बताई हैं, अब इसके आगे आपको खुद परमेश्वर सिखाएंगे। इसलिए आप लगातार उपवास और प्रार्थना में समय बिताएं और याद रखें कि परमेश्वर की सामर्थ अथाह है। चेले प्रार्थना और वचन से अधिक किसी भी काम को अहमियत नहीं देते थे (प्रेरितों के काम 6:2)। आप भी वचन और प्रार्थना में लगे रहें।

अन्तिम अभिवादन

इस पुस्तक को संयम के साथ पढ़ने के लिए आपका धन्यवाद। इस पुस्तक में बताई हर बात, माध्यम तथा उपाय को अपनी जीवन–शैली और प्रार्थना का हिस्सा बना लीजिए। इस पुस्तक के द्वारा जो आत्मिक उत्साह और आग आपके अन्दर उत्पन्न हुई है, उसे किसी भी हालत में दोबारा बुझने न दें। यदि फिर भी आप अपने जीवन में कभी पाप को महसूस करें, प्रार्थना की कमी को महसूस करें, आत्मिक उत्साह की कमी को महसुस करें या किसी भी प्रकार से परमेश्वर से दूरी को महसूस करें तो इस पुस्तक को दोबारा ज़रुर पढ़े। उस समय यह मत सोचिएगा कि इस पुस्तक को तो मैंने पढ़ा हुआ है, नहीं तो यह शैतान की सफलता बन जाएगी। क्योंकि मैंने पहले अध्याय में बताया था कि इस पुस्तक का हर एक शब्द मैं प्रार्थना और भविष्यवाणी की आत्मा के साथ लिख रहा हूँ। याद रखिए यदि इस पुस्तक ने आज आपके जीवन पर प्रभाव छोडा है और आपके जीवन को बदला है तो यह आगे को भी कर सकती है।

इस पुस्तक से आपने जो सीखा है उसे दूसरों को भी सिखाए। इस पुस्तक को अपने परिवार, दोस्तों और कलिसीया के साथ भी बांटें ताकि वह भी उत्साहित हो सके।

मैं आशा करता हूँ कि इस पुस्तक ने आपके जीवन पर कुछ न कुछ प्रभाव ज़रुर छोडा होगा। कृप्या अपने अनुभव मुझे ज़रुर बताएं या लिखकर भेजें। मैं आपके अनुभवों का बेसबरी से इन्तजार करूंगा। धन्यावाद।

****

Pastor Samit Kumar

Kothi No 513 B, LIC Colony, Mundi Kharar, Mohali (Pb), Pin 140301, India

Phone – 9888565337 E-mail – kumarsamit12@gmail.com

www.facebook.com/SPAKharar/

पास्टर सम्मित कुमार 2008 से चर्च सेवकाई में कार्यशील हैं। यह पिछले दस वर्षों से अपनी पत्नी गीता रानी, बेटा केविन और बेटी जेनिस के साथ मुण्ड़ी खरड़, मौहाली (पंजाब) में रह कर सेवकाई कर रहे हैं। यह वर्तमान समय में, दो विभिन्न क्षेत्रों में दो चर्च का नेतृत्व कर रहे हैं। यह एक जोश और आत्मिक उत्साह से भरे प्रचारक हैं तथा विश्वासियों को सेवकाई करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।यह एक प्रार्थनाशील व्यक्ति हैं जिस कारण परमेश्वर ने इन्हें कई प्रकाशनों से भरा है। इन ईश्वरीय प्रकाशनों के द्वारा यह सैकड़ों विश्वासियों को परमेश्वर के लिए उत्साहित कर चुके हैं। परमेश्वर इनके प्रकाशनों और सेवकाई को चिन्हों और चमत्कारों द्वारा प्रमाणित करते हैं। इनकी सेवकाई के जरिये कई लोगों ने चंगाई, छुटकारा और आशीष पाई है। लगातार अपने दर्शन और परमेश्वर द्वारा प्राप्त बुलाहट की तरफ बढ़ रही इस सेवकाई के लिए प्रार्थना करते रहें।